

Rohitas Mahila College, SASARAM

Study Material For B.A. Part III ~~English~~
(SANSKRIT)

Dr. Savitri Singh,
Associate Professor,
Dept. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

काव्यदीपिका द्वितीयखंड

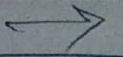
Date :
27.05.2020
Wednesday
Paper VII

Topic: शब्दशास्त्र : लक्षणा

स्नातक भाग तीन में प्रस्तावित पाठ्यपुस्तक काव्यदीपिका (श्रीमान्निवृत्तमहाराजसंस्कृत) में लक्षणा के स्वरूप का वर्णन और उल्लेख करते हुए आचार्य विश्वनाथ को मुख्याध्यापक तदुक्तो... शक्तिरूपिता का उल्लेख किया गया है। इस क्रम में पूर्व में हमने लक्षणा के दो भेदों खड़े लक्षणा और प्रयोजनवती लक्षणा को समझने की कोशिश की। जिस क्रम में 'कलिंगः साहसिक' वाक्य में किस प्रकार खड़े लक्षणा द्वारा अर्थ की प्रतीति हो रही है उसे समझा। अतन्त्र प्रयोजनवती लक्षणा को समझते हैं।

'गंगायां घोषः' - गंगा के तट पर बनी हुई कोपड़ी को देखकर किसी ने कहा है कि : यह मैं कोपड़ी तौ गंगा में बनी हो। वाक्य में गंगा तो स्थान विशेष अथवा स्थल अर्थ विशेष में प्रवृत्त होने वाली जलधारा है, जल प्रवाह है। उसमें कोपड़ी अथवा कुटिया कैसे हो सकती है।

अतः 'गंगायां घोषः' में गंगा शब्द अपने मुख्य अर्थ को छोड़कर उससे सम्बद्ध गंगातरङ्गी अर्थ का लक्षणा शक्ति से बोध कराता है। इस वाक्य में वक्ता का प्रयोजन



यह प्रगट करता है कि जहाँ कुरिया बनी है वह लान ठप्पा और पवित्र है, मानो गंगा का प्रवाह ही है। इस प्रकार उपोषण और पवित्रता के आधिक्य को व्यक्त करने के लिए ही उसने गंगा में गोपत्री है। इस वाक्य का प्रयोग किया। किसी प्रयोजन से जिस लक्षणा का प्रयोग किया जाय उसे प्रयोजनवती लक्षणा कहते हैं।

इस प्रकार लक्षणा यदि और प्रयोजन के भेद से दो प्रकार की हुई। इन दोनों लक्षणाओं में ही दो दो भेद कहे जाते हैं। उपादान लक्षणा और लक्षणलक्षणा। इस प्रकार लक्षणा, प्रयोजनवती, उपादान लक्षणा और लक्षणलक्षणाओं के भेद से लक्षणा चार प्रकार की होती है।

उपादान लक्षणा :

स्वसिद्धये पराक्षेपेऽसावुपादानलक्षणा ।

अपने अर्थ को बोध कराने के लिए जहाँ पर दूसरे पद का आक्षेप किया जाता है, उसे उपादानलक्षण कहते हैं। इस प्रकार वाच्यार्थ के लक्षणी अन्वयबोध के लिए जहाँ लक्ष्यार्थ बोध में वाच्यार्थ से सम्बद्ध लक्ष्यार्थ का बोध होता है, वह उपादानलक्षणा कही जाती है। जैसे 'यत्प्रथमः प्रविशति (लाडियों प्रवेश कर रही हैं) यह अचेतन होने के कारण यदि का स्वतः प्रवेश करता सम्भव नहीं है। अतः यदि पद से यादृच्छिकी पुरुष का आक्षेप किया जाता है, लाठी वालों के प्रवेश के साथ ही लाडियों का प्रवेश उचित है। अतः इसे उपादानलक्षणा कहते हैं। इस लक्षणा में पद अपने अर्थ को न छोड़कर अन्वयबोध के लिए पदांतर को आक्षेप करके उनके साथ लय अन्वित हो, अर्थबोध कराते हैं, इसलिए इसे अजह्व स्वार्थगी कहते हैं।